सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

• हेमंत बोर्डिया

सृजक-सृजन-समीक्षा

हेमंत बोर्डिया

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

हेमंत बोर्डिया का परिचय

नाम - हेमंत बोर्डिया

पिता - श्री कुंजीलाल बोर्डिया

माता - श्रीमती द्वारकी बोर्डिया

भार्या - श्रीमती दीपाली बोर्डिया

पुत्र - सार्थक बोर्डिया

जन्म - २८ जून १९७६

जन्मस्थान - खरगोन (म.प्र.)

कर्मस्थल - इंदौर (म.प्र.)

शिक्षा - स्नातक विज्ञान (गणित)

रोजगार - प्रबंधक विपणन

विधा - तुकांत, अतुकांत, ग़ज़ल

(विधाओं में दक्षता हेतु परिमार्जन जारी है)

उपलब्धि

अंतरा के माध्यम से पहला साझा ग़ज़ल संकलन 'गूँजन' का प्रकाशन ।

अंतरा शब्द शक्ति सम्मान ।

रुचि

संगीत,गायन, ग़ज़लें, क्रिकेट, यात्रा

आत्मकथ्य

मध्यमवर्गीय परिवार से वास्ता रखता हूँ ।पिताजी पढाई के लिये संघर्ष कर अपने गाँव से शहर आये, शासकीय नौकरी हासिल की, उचित शिक्षा का माहौल एवं अवसर प्रदान कर हमें शिक्षित इंसान बनाया ।
विद्यालयीन कार्यक्रमों में निबंध लेखन से स्वयं में लेखन गुणों का अंकुरण महसूस किया । महाविद्यालयीन शिक्षा पूर्ण होने तक निबन्धों के अलावा मात्र 4-5 कविताएं और 2 एकांकी लिख चुका था ।
बाहर निकल कर रोजगारोन्मुखी रास्तों पर रोजगार की तलाश में दौड़ लगाई और उस दौड़ से उड़ती धूल में लेखनशक्ति के अंकुर वहीं कहीं दब गए और वर्षों दबे रहे । संचार तकनीकी में विकास के चलते एक काव्यमंच रूपी वाट्सप समूह से जुड़ा । अच्छी रचनाओं के पाठन , संकलन और कॉपी पेस्ट के साथ दबे हुए अंकुरों को नमी मिली और प्रस्फुटन के बाद सृजन का पौधा लहलहाने लगा । वरिष्ठों के स्नेह मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के चलते यह पौधा आज आज आपके सामने है। अंतरा के सहयोग से इस पौधे में प्रकाशन और सम्मान के दो पुष्प भी खिल चुके हैं । आप सभी अपने स्नेहाशिष एवं मार्गदर्शन से इस पौधे को इतना लायक वृक्ष बना दें कि यह स्वयं की छाया में नए साहित्य सृजक पौधों को आश्रय दे सके ।

"सृजक का सृजन"

अपनी जगह

प्यार ..
अपनी जगह है ,
शिकायतें अपनी जगह..!
समझौते अपनी जगह है,
आदतें अपनी जगह..!

खुद को बहुत कुछ बदल लेना
अपनी जगह है ..!
बहुत कुछ न बदल पाना
अपनी जगह...!
तुम्हारी कुछ आदतों पर मेरी खीज
अपनी जगह है...!
तुम्हारी कुछ आदतों पर
मुझे प्यार आ जाना
अपनी जगह...!

जरा सी बात पर
तुम्हारा मुँह फुलाना
अपनी जगह है ..!
कभी बेतुकी बात पर
तुम्हारी अल्हड़ हँसी
अपनी जगह...!

तुम्हारा चारदीवारी से निकल कर
एक पहचान बनाना
अपनी जगह है ...!
कभी आसान से काम के लिए
तुम्हारा मुझे पुकारना
अपनी जगह...!

व्यस्तता के चलते रिश्तों से,
तुम्हारा दूरियाँ बनाना
अपनी जगह है ..!
कुछ वक़्त की मुलाकात में
रिश्तों का दिल जीतना
अपनी जगह...!

एक दूसरे को बदलने की
हमारी गैर वाज़िब ज़िद
अपनी जगह है...!
एक दूसरे में उसी पुरानी
कशिश की चाह
अपनी जगह...!

लेकिन इस सब बातों के गवाह
ये ज़मीन न जाने कितने
ज़मानों से
अपनी जगह है ..!
और ये नीला आसमान
भी तो वहीं अपनी जगह..!

सूरज करोड़ों वर्ष से
दहक रहा है अपनी जगह....!
और ये हवा समय दर समय
बह रही है अपनी जगह ....!

शायद बता रहें हैं कि वक़्त
के साथ सूरत तो बदलती जाती है..!
लेकिन सीरत बदलना
आसान नहीं होता...
वो यूँ ही रहती है अपनी जगह...!

व्यवहार ही बदल गए तो फिर
दुनिया में जियेंगे कैसे..!
धरती घूमेगी नहीं..
सूरज चमकेगा नहीं...
हवा बहेगी नहीं..
मौसम बदलेगा नहीं...!!

प्रकृति के इस नियम से
आओ कुछ सीखते हैं ..!
मैं जैसा हूँ वैसा रहूँ
अपनी जगह...!!
तुम जैसी हो वैसी रहो
अपनी जगह...!!

सुलह

नींद आँखों में किस तरह बैठे
ख़्वाब आँखों से कर सुलह बैठे।

लाख अरमान दबा रक्खे हैं
बोझ इतना कि दिल की तह बैठे।

उसने तरक़ीब से किये एहसां
हम भी धोखे में ख़ुदा कह बैठे।

दिल लिये फिर रहा हूँ हाथों में
इश्क़ की कोई तो वज़ह बैठे।

तोड़ कर फिर नया सिरा जोड़ो
दिल के धागों में जब गिरह बैठे।

सिक्का किस्मत का फिर उछाला है
अब के जाने ये किस सतह बैठे।

कच्चे घर से निकल के आ जाओ
जाने कब ये मकान ढह बैठे ।

किस बहर में न जाने लिक्खे है
जो भी एहसास दिल से बह बैठे।

बन्धन

मत बांधों मुझे ..
किसी अनिष्ट,
अनभिलाषित
घटना के भय-बंधन से...!
मत बांधों मुझे तुम्हारे
अपने स्वाभिमान,
तुम्हारी आन के
अस्तित्व की मूरत बना कर..!
न बनाओ मुझे वॉलपेपर
तुम्हारी घरेलू
मानवीय सम्पदा का ...!
नाम पर प्यार और संरक्षण के..!!

मैं उड़ना चाहती हूँ..
खुले असीमित
आकाश में..
सीख लूँगी
नन्हें परिंदों
की तरह
मैं भी,
बचना,संभलना,लड़ना..!

मैं चाहती हूँ ..
एक खूबसूरत उड़ान..!
इस बात की परवाह
किये बगैर **कि**
कोई ज़मीन से देख रहा है
या नहीं ... क्यूंकि,
मैं उड़ रही हूँ स्वयं के लिये ...!
मैं नहीं नापती
अपनी ऊंचाई को ...
नहीं करती मैं
प्रतियोगिता किसी से..
इस उड़ान में मिलने वाला
आनन्द ही है मेरी उपलब्धि ..!
यही मंज़िल है ..
यही है उत्सव ..
मेरी जीत का...!!

मुखड़े

कितने मुखड़े त्याग चुका हूँ, कितने धरना बाकी है ..!
कितने रूप सजाए मुख पर, कितने सजना बाकी है ..!

जीवन अध्यायों की माला,
अध्यायों के प्रश्न अनूठे
करते करते हल प्रश्नों का,
जाने कितने रिश्ते रूठे..
कितने सबक पढ़े जीवन के
कितने पढ़ना बाकी है..!

कितने रूप सजाये मुख पर
कितने सजना बाकी है...!

मैं पथिक हूँ उन राहों का,
जिन पर विरले सहगामी हैं..
इस पथ ठौर न छाया कोई,
चलना भी तो अविरामी है..
इतनी दूभर ,जटिल राहों पर
कितना चलना बाकी है ..!

कितने रूप सजाये मुख पर
कितने सजना बाकी है...!

विश्वासों की बलिवेदी पर,
अक्सर खुद को आहत पाया..
जहाँ लाभ के थे अधिकारी,
घाटा ही बस हिस्से आया..
कितना कुछ कर लिया सहन अब
कितना सहना बाकी है..!

कितने रूप सजाये मुख पर
कितने सजना बाकी है...!

कागज़ की नाव

नाव कागज़ की लेकर बहे दूर तक
रब की मर्ज़ी तलक हम चले दूर तक

ये हवाएं बहुत आज ख़ामोश है
किसके दम पर ये तिनके उड़े दूर तक

वक़्ते रुख़सत हमे तो यकीं था मगर
बिन मुड़े ही चले तुम गये दूर तक

चाँद पूनम का होती है खुशियाँ सभी
एक पल जो बढ़े फिर घटे दूर तक

करवटें हम बदलते रहे रात भर
वो भी सुनते रहे धड़कने दूर तक

है पिता आसमां की तरह से मेरे
कद में ऊँचें बहुत और झुके दूर तक

माँ की आंखों में सागर समाया हुआ
प्यार ही प्यार मुझको दिखे दूर तक

झील जैसे अज़ाबों की, आंखे तेरी
जब भी झाँका , गए डूबते दूर तक
(अज़ाब - पीड़ा)

क्या लिखूँ ?

मुक्त लिखूँ , उन्मुक्त लिखूँ,
या बंध नियमों से युक्त लिखूँ..!
लिखूँ हिंदी में या उर्दू में,
या भाव को भाषा मुक्त लिखूँ..!!

शब्दों का अभिषेक लिखूँ,
या भावों का अतिरेक लिखूँ..!
लिखूँ जो हिरदय के तल बैठे,
या मस्तिष्कीय विवेक लिखूँ..!!

मंचों का ठहाका , धूम लिखूँ,
या खुद के भीतर झूम लिखूँ..!
मैं लिखूँ नायिका के गेसू ,
या चरण मात के चूम लिखूँ ..!!

सरकारों का मैं दम लिखूँ ,
या राजतंत्र का भ्रम लिखूँ..!
लिखूँ जनता को कर्तव्यहीन ,
या समय ही है विषम लिखूँ..!!

मैं श्रृंगारों का रोम लिखूँ,
या इसका प्रतिलोम लिखूँ..!
लिखूँ होली के हुड़दंगी पर,
फिर घोट भांग, रस सोम
लिखूँ..!!

या अल्ला हु , राम लिखूँ,
या रास रचैया श्याम लिखूँ..!
लिखूँ मेरी मरियम के आँसू
या वाहे गुरु दा नाम लिखूँ..!!

कहे सूरदास साकार लिखूँ ,
हुए कोटि जो, अवतार लिखूँ..!
मैं लिखूँ प्रार्थना ईश्वर की,
या कह कबीर निराकार लिखूँ..!!

आवरण

आओ कि हटा दूँ ..
ये आवरण जो
तुमने ओढ़ रखें हैं..
नाम पर ,
नक़ाब के,
हिज़ाब के,
घूंघट के,
मर्यादा के,
अभिव्यक्ति पर
दबाव के..!

मैंने देखा है हमेशा
एक पर्दा,
एक नक़ाब,
एक घूंघट ,
एक मर्यादा ,
तुम्हारी आँखों में ....!
शर्म के
लाज के ,
हया के रूप में.... और
वही है सच्चा आवरण,
असली पर्दा,
जो होता है आंखों में
स्त्री की ही नहीं
मर्द की भी...!

आओ की खिला दूँ,
तुम्हारे होठों पर..
उन्मुक्त हँसी,
अल्हड़ हँसी,
मुस्कुराहट ,
जो पूर्ण खिली,
कह सको तुम
सही को सही
गलत को गलत
आओ कि, तुम्हें
बना दूँ मैं ..
उन्मुक्त आकाश की
स्वतन्त्र चिरैया ...!!

"सृजन की समीक्षा"

1.

नमस्कार अंतरा परिवार

श्री हेमंत बोर्डिया जी,,, एक ऐसा नाम जिसे सुनकर चेहरे पर अपने आप मुस्कुराहट आ जाती है,,, आज केंद्रीय पोस्ट मैं उनकी रचनाएं एवं परिचय पाकर एक अलग ही आनंद महसूस कर रहा हूं,,,,

एक बहुत सरल, हंसमुख, मिलनसार व्यक्तित्व और सुरीले कंठ के मालिक श्री हेमंत जी से में तीन बार मिला, उनके साथ दो गोष्ठियां भी साझा की,,,

जितना सहज और सरल उनका आत्मकथ्य है,,, वह वाकई उतने ही सरल एवं मिलनसार व्यक्ति हैं,,, मेरा सौभाग्य कि वे मेरे मित्र हैं,, उनकी रचनाओं के बारे में क्या कहूं,,, उनकी ग़ज़लें लाजवाब होती हैं,,, और आजकल तो मुक्त कविता, नवगीत भी जबरदस्त लिख रहे हैं,,,, आज प्रस्तुत सभी रचनाएं,,, जिन्हें में अपनी अल्प बुद्धि से आपकी प्रतिनिधि रचनाएं कह सकता हूं,,,, शानदार है,, लाजवाब है,,, बेहतरीन है,,

भगवान आपकी कलम को यूं ही गतिमान बनाए रखें,,,, आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें,,, आपके उज्जवल साहित्यिक भविष्य के लिए अनेकानेक शुभकामनाएं एवं पुनः हार्दिक बधाई,,,,,

बहुत-बहुत धन्यवाद आदरणीय पिंकीजी, प्रीतिजी एवं अंतरा संचालक मंडल,,,, एक शानदार व्यक्तित्व से पुनः रूबरू करवाने के लिए ,,,,,,,,

जयकृष्ण चांड़क 'जय'

हरदा म प्र

2.

प्रिय हेमंत जी

समझ में नि आ रिया है कि क्या लिखूँ

वैसे ही मैं तो पंखा हुए जा रिया हूँ आप का

कुछ भी सूज सम्पट नि पड़ री कई लिखूँ ?
कसा लिखूँ और कतरो लिखूँ..
आइसो करां कि थोड़ी देर ने आऊँ
शब्दा भेला करना पड़ेगा नी आप रे लिखबा वास्ते..

सच मे हेमंत जी..अगर मैं निष्पक्ष और स्वतंत्र भावनाओं को रखूँ, बिना किसी पूर्व प्रभाव से ग्रसित हो कर तो,
आप वाकई मैं एक उत्कृष्ट और दिल पर गहरी छाप छोड़ने वाले साहित्यकार ही नहीं अपितु एक अच्छे सरल नेक दिल इंसान है और आप के व्यक्तित्व का ये प्रवाह एक बहती नदी की तरह आप के साहित्य में भी दिखता है.. मेरा ऐसा मानना है कि इंसान को नैसर्गिक होना चाहिए और अच्छी बात ये है कि वो नैसर्गिकता आप की रचनाओं के साथ आप में भी नज़र आती है..
साहित्य की इस गुलशन में आप ऐसे गुल की तरह है जिसकी महक से पूरा गुलशन महका हुआ है..कोई भी अछूता नहीं है..
आप की रचनाएँ ऐसी है जैसे बहता पानी..बिना किसी दबाव के दिल में उतर जाती है..और मन मष्तिष्क पटल पर तुरंत फैल कर अपना अधिकार जमा लेती है और वश में कर लेती है.. आप की सशक्त लेखनी को ह्रदय से नमन.. ऐसे ही जीवन में आगे बढ़ते रहो..और उन नामचीन सफल साहित्यकारों की श्रेणी में आ जाओ जहाँ मैं और हर शुभचिंतक ये गर्व महसूस कर सके कि बोर्डिया जी हमारे साथी हैं..
आप की हर रचना बेजोड़ उन ऊंचाइयों को छूते हुए है जो नित नए आयाम बना रही है..निःसंदेह आप एक लाजवाब गजलकार तो है ही आज कल आप बेहतरीन अतुकांत नवगीत और नज़्म के भी बादशाह बन गए है..
मेरा आप का बस इतना परिचय हर कि हमने कुछ काव्य गोष्टी साझा की है और एक दो में आप को सुना है..बाकी बस इस व्हाट्स एप्प रूपी

संचार माध्यम पर जितना पढ़ा और सुना है बस इतना ही..लेकिन आप का व्यक्तित्व ऐसी छाप छोड़े हुए कि मैं आप को बरसो से जानता हूँ.. बोर्डिया जी..मेरी सहृदय शुभकामनाएं आप के साथ है..आप निरंतर साहित्य के पथ पर प्रगतिशील रहें..सभी गुणीजन का स्नेह आशीर्वाद आप पर बना रहे..और साहित्य के आभामंडल में एक चमकते सितारा की उभर कर आएं..

आप के बारे में जितना लिखे कम है इसलिए सभी की सुविधा को देखते हुए मैं अपनी अधूरी भावनाओं को यहीं विराम देता हूँ..

नित नए आयाम लेकर,,,,,,,,, आता ये हेमंत
गजल कभी नवगीत,,,,,,,,, सुनाता ये हेमंत
सरल स्वभाव और उत्कृष्ट लेखन है पहचान
सब का दिल जीत लिए,,,,,,, जाता ये हेमंत
मन्त्र मुग्ध कर देता है,,,,,, पूरा आभामंडल
इतना सुरीला ग़ज़ल गीत,, गाता है ये हेमंत
गीत गजल,,नज़्म कविता का करके सृजन
साहित्य के नित नए फूल,, उगाता ये हेमंत
नहीं किसी से राग द्वेष,,,,,, न किसी से बैर
हँसमुँख चेहरा लिए,,,,, मुस्कुराता ये हेमंत
इतना उत्कृष्ट लेखन है बात बताता शीतल
जो पढ़ ले उस ह्रदय में,,,,,,समाता ये हेमंत
पुनः बधाइयाँ स्वीकार करे..

शीतल खण्डेलवाल

3.

हेमंत बोर्डिया जी आज मेरी खुशनसीबी है कि आपको बड़ी ही प्रसन्नता से मंचस्थ देख रही हूं ,,,इतनी कम उम्र में कलम और भाव पर ऐसी पकड़ होना ,,,हर किसी को नहीं हासिल होता,,, आप पर सरस्वती की विशेष

कृपा है । व्यक्तिगत जीवन में आप जितने सरल और सहज हैं। उतने ही अपने लेखन में भी हैं,,,,

अपनी जगह एक सीधे सीधे बात करती हुई सी नज़्म,,

सुलह ,,,एक उस्तादाना ग़ज़ल,,

सिक्का किस्मत का फिर उछाला है

एक अलग अंदाज

बन्धन एक संवेदनशील प्रस्तुति

स्त्री के दृष्टिकोण से हर पहलू पर गौर किया है

मुखड़े ,,, सामाजिक विसंगतियों पर पूर्णतः प्रकाश डालना ,,,,साधुवाद

काग़ज़ की नाव आलातरीन ग़ज़ल

हेमंत जी ,,,, आगे चलकर आप निस्संदेह राष्ट्रीय कवि के रूप में अपनी पहचान बना पायेंगे,, मे**री ओर से अशेष शुभकामनाएं**

सुनीता लुल्ला

4..

आज रविवार सप्ताह का कवि विशेषांक में भाई हेमंत बोर्डिया जी को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं। आपके जीवन परिचय आत्मकथ्य को पढ़ा मुझे आशा ही नही पूर्ण विश्वास है कि आप साहित्यिक सफलताओं के उच्चतम शिखर को स्पर्श करोगें। आपके साहित्यिक कर्म को हार्दिक नमन। **मैं जब से अंतरा समूह से जुड़ा हूँ तब से मुझे आप में मिलने की चाहत थी और वह अंतरा शब्दशक्ति सम्मान समारोह में पूरी हो गई जैसे सोचा था उससे कहीं अधिक बढ़कर पाया।** जब मैं अंतरा शब्द शक्ति सम्मान समारोह में इंदौर गया तो सर्वप्रथम आपसे ही मुलाकात हुई और आपने मुझे देखते ही पहचान लिया। मुझे अत्यंत प्रसन्न्ता हुई और मैंने आपके व आदरणीय कैलाश सिंघल जी के साथ एक सेल्फी ली जिसे मैंने अपने गांव में अपने शिक्षक साथियों को बताया और वह फोटो भी बताई जो मैंने आपके और आ.सिंघल जी के साथ ली थी। आपका सादा सरल

सौम्य व्यक्तित्व सब को मोह लेता है।
आपकी सभी रचनाएँ प्रेम माधुर्य एवं आत्मिक संतोष से परिपूरित है। जो पाठक को आल्हादित करने में समर्थ है।
आपकी प्रथम रचना **अपनी जगह** में आपने हर वस्तु का अपनी जगह महत्व है बताने का सार्थक प्रयास किया। उत्तम रचना।अद्वितीय रचना ।
सुलह शानदार भावपुरित गजल
तृतीय रचना **बंधन** एक स्वतंत्र भावना की उड़ान उड़ती सुंदर
बहुत ही खूबसूरत अभिव्यक्ति।
चतुर्थ रचना **मुखड़े** जो कहती है कि इंसान को जीवन में न जाने कितने मुखोटे बदलने पड़ते है। जीवन की एक कटु सच्चाई को उघाड़ती उत्तम रचना।
पांचवीं रचना **कागज की नाव** आशा और उम्मीदों के समंदर में तैरती भावनाओं की नाव। सुंदर भावपूर्ण रचना ।
छटवीं रचना **क्या लिखूँ** बहुत कम शब्दों में बहुत कुछ लिख दिया आपने। बहुत ही सुंदर रचना ।
अंत में सातवी रचना **आवरण** में झूठ दिखवा के सारे आवरण हटाने की उत्तम भावपूर्ण कामना की उत्तम अति उत्तम।
आपकी सभी रचनाएँ उत्तम एवं भावपुरित है। जो सहज ही पाठक को सोचने विचरने पर मजबूर कर देती है। आपका शब्द संयोजन सटीक है जो रचना का स्पस्ट अर्थ प्रदान करने में सफल रहा है। **आपकी कलम नित नव लेखन के नव आयाम घड़ते हुए सफलता के शिखरों को स्पर्श करती रहे इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।**

कैलाश मंडलोई 'कदंब'
खरगोन मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा। अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com